RNI No.-90387CHHBIL/2006/17830 ISSN-0973-6387
April-June 2013, Price-200/-

A Registered & Refereed International Research Journal

RESEARCH *Digest*



Circulation Area - J & K, Himachal Pradesh, Punjab, U.P. Uttaranchal, Madhya Pradesh, Maharashtra, Gujrat, Chhattisgarh, Orissa, Andhra Pradesh, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Andaman & Nicobar Island

58	Social contract theory	Khushal Suryawanshi
60	An empirical analysis of friday effect on NSE Nifty companies	Dr. Priyank Mishra
66	Study on the species diversity of mammals in Kanger Ghati National park, Jagdalpur (C.G.)	Sonu Tiwari, Dr. Shweta Sao
73	Social and Commercial Responsibilities of Public Distribution System (with Special Reference to Bilaspur District)	Dr. (Smt.) Shobha Chauhan
76	Job Satisfaction of Male and Female Teachers having More and Less then 15 Years of Teaching Experience': A Study	Dr.P.K. Naik, Ms. Pragya Yadav
78	Film Review	Dr. S.K. tiwari
82	भारत में जनसंचार साधन तथा दलित युवा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. निखिल कुमार श्रीवास्तव
83	महावीर वाचन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. रमेशकुमार दण्डन
88	भारत में नवजागरण में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान	डा० अंजनी पाठक
90	भारतीय गांवों के प्रति ब्रिटिश नीति	डॉ. सीमा द्विवेदी
93	कोरिया जिले के दक्षिण पूर्वी प्रक्षेत्र में कार्यरत कोयला श्रमिकों की मजदूरी एवं उनके जीवन स्तर में संबंध	डॉ. के.के. शर्मा., पूनम यादव
97	प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं के कामकाजी महिलाओं के रूप में उनकी समस्याओं और उसके पारिवारिक एवं अन्य प्रभावों का विश्लेषण	प्रो. हर्षद आर. ठक्कर

Copyright © Dr. S.K.Tiwari

- Research Digest is a Registered and Refereed Quarterly Research Journal. Matters related to research papers such as selection/ acceptance/rejectionis decided by editorial board with the help of advice given by Subject Expert of the concerning subject. In this regard the final decision will be of editors which is binding to all.
- All the work related to editing, publication, consultation is on honorary basis. Publication of regular issues depends on the availability of research papers.
- The views expressed in the articles are those of individual authors. Editors/Publisher do not take responsibility for issues related to intellectual property or other matters.
- All the disputes related to Research Digest will come under jurisdiction of Bilaspur Court only.

Letter From The Editor



Thousands of women in Britain with a family history of breast cancer will become the first in the world to be offered a drug that will cut their cancer risk by 40%.

In what is being called a historic and game changing move, the National Institute for Health and Care Excellence (NICE) has said tamoxifen or raloxifene will be given to women for five years, which will give them a choice of just popping a pill rather that get a mastectomy.

Breast cancer is the most common form of the disease in UK, and of all those who develop the condition, around 1in 5 has a family history.

A family history of breast cancer is often caused by faults with the BRCA1 or BRCA2 genes, which have been passed on from parent to child. People who carry the BRCA gene have between a 60-90% chance of developing breast cancer.

Currently, if a person is considered to have a high risk of breast cancer, they are eligible for annual screening to detect any tumour early on. Alternatively they can choose surgery to prevent developing disease. This is a major and traumatic intervention for all involved, and was recently highlighted by the case of Angelina Jolie's decision to opt for a double mastectomy.

NICE said on Tuesday that women with a family history of breast cancer are now eligible for drug treatments. NICE has recommended that either tamoxifen or raloxifene should be offered for 5 years to post menopausal women with a uterus and at high risk of breast cancer.

NICE says tamoxifen is effective in reducing breast cancer incidence when used for chemoprevention.

Estimates suggest that offering these treatments could help prevent breast cancer in around 3% of all women aged 35years and older-affecting around 4888,000 women. While neither drug is currently licensed as a preventative treatment for breast cancer, they are currently approved for use in the US.

(Dr. S.K.Tiwari)

महावीर वाचान : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मारवाड़ी परिवार में जन्म लेने के बावजूद मारवाड़ी गुणों से आप च्यूत हैं। बंगाल में रहते हैं, पर बंगाली नहीं हिन्दी से प्रेम करते हैं। कामर्स की पढ़ाई न कर इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। एक पैर से लंगड़े हैं, शायद इसीलिए जमाने में लीक से हटकर चलते हैं। जो सोचते हैं, उसे कहते हैं; और जो कहते हैं, उसे करते हैं। इन्हीं सब कारणों से आपको राम मनोहर लोहिया भी कहते हैं। सामाजिक दुर्व्यवस्था के घोर विरोधी हैं, व्यवहार में भी। आपने समाज एवं समाज से जुड़े हर पहलू पर अपनी पैनी नजर डाली एवं साहित्य रचना की। आपका व्यंग्य निबंध संग्रह 'मार्क थ्री की गरीबी' है। इसमें आपने अनुभूत विडम्बनाओं को उभार कर रख दिया है। आपने जैसा देखा एवं भोगा उस पर आपकी धारदार कलम दौड़ी है।

व्यक्तित्व

महावीर प्रसाद अगरवाला का जन्म 03 या 05 दिसम्बर 1936 को ढिगगूला जिला– चुरू (राजस्थान) में हुआ। आप 01 महीने की उम्र से 12 वर्ष की उम्र तक राजस्थान से बंगाल के बीच संटिंग करते रहे। अमुमन 2–3 साल बंगाल में, 2–3 साल राजस्थान में; राजस्थान में हिन्दी तो बंगाल में बंगला और हिन्दी पढ़ते रहे। सन् 1948 से 1960 तक पूरी तरह बंगाल में रहकर पढ़ाई– लिखाई की। 1960 से 1962 तक फिर राजस्थान में रहे। अब पक्की तौर पर बंगाल में रहते हैं। राजस्थान का घर बेच आए हैं। यद्यपि आपका जन्म ननिहाल में हुआ पर मूल निवास तारानगर (चुरू) ही है। आपका वर्तमान निवास – आराधना एपार्टमेन्ट्स, आनंद मोहन बसु रोड,निकट– देशबंधु स्पोर्टिंग क्लब, सिलीगुड़ी – 734409 फोन नं. 0353–2660619.

अक्षरारम्भ राजस्थान में बंगला के 'अ' अक्षर से हुआ। फिर पाठशाला में हिन्दी और गणित। इसके बाद तारानगर के शासकीय माध्यमिक शाला से तीसरी – चौथी। 1948 में बंगाल में पाँच को छोड़ सीधे छठवीं में बंगला माध्यम के विद्यालय में प्रवेश लिए। बंगला के मात्र अक्षर ज्ञान से छठवीं में पढ़ना सहपाठियों के कौतुक का विषय था। पर ट्यूशन एवं स्वयं की मेहनत से उस कक्षा में प्रथम, यहाँ तक कि बंगला में भी प्रथम आए। बेलाकोबा (जलपाइगुड़ी) से स्कूल– फाइनल पास कर जलपाइगुड़ी में इन्टर– साइन्स, फिर वहीं के पॉलिटेक्निक से सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किए। इस बीच तीन महीने कलकत्ते में बी.काम.की पढ़ाई की। जलपाइगुड़ी में इन्टर करते समय प्रयाग की 'प्रथमा' की परीक्षा भी पास किए।

ऑकने में आपका हाथ अच्छा था। हाई स्कूल में पढ़ते समय हस्तलिखित बंगला पत्रिका (विद्यालय की) का इलस्ट्रेशन किए। उसके बाद जलपाइगुड़ी से हस्तलिखित त्रैमासिक/मासिक 'रेणु' नामक पत्रिका की सजावट किए।

सदा से ही 'तीसरी बात' के प्रति मोह। मारवाड़ी बनिये को कामर्स पढ़ना चाहिए था, पर आपने सिविल इंजीनियरिंग और विज्ञान की पढ़ाई की। बनिये को व्यापार में लगना चाहिए था, पर आपकी रूचि साहित्य की ओर थी। शुरू से ही आपकी आदत कुछ टेढ़ा, कुछ तीसरी बोलने की रही है। जो कहते हैं, उसे करते हैं। हिन्दी को चाहते हैं – तो हिन्दी में विजिटिंग कार्ड, हिन्दी में पता लिखना, केन्द्रीय कार्यालय में साधारणतः हिन्दी में पत्र, अंग्रेजी में नहीं बोलना आदि का व्यवहार भी करते हैं। अपने विवाह के समय से ही दहेज विरोधी रहे हैं। जो दहेज लेता है, उसके विवाह में शामिल नहीं होते – चाहे वह भान्जा, साला या मामा ही क्यों न हो। लड़के के जन्म का उत्सव नहीं मनाते, न मिठाई स्वीकार करते, न मिठाई बाँटते। अपनी बड़ाई तो एकदम नहीं, दूसरों की बड़ाई में भी कंजूसी करते हैं। एक पैर से लंगड़े हैं, शायद अपनी कमी को पूरा करने के लिए, या अपनी पहचान बनाने के लिए। जो सोचते हैं, उसे कहने में कम झिझकते हैं। शायद इसीलिए आज से 44 साल पहले आपके बंगला शिक्षक आपको राम मनोहर लोहिया कहते थे।

आपके पिता की दूसरी शादी से एक मात्र पुत्र – संतान होने के कारण, और पिता को भी शौक था कि उसका लड़का दस आदमियों के बीच में खड़ा होकर बोल सके; इसलिए व्यापार में आपको नहीं खींचा गया। आपको स्वतंत्र कर रखा

डॉ. रमेशकुमार दन्डन (सह.प्रा.) महात्मा गांधी स्ना.महावि.खरसिया, जिला–रायगढ़ (छ.ग.)

था घर में।

आप तीन लड़कों के पिता हैं, पर उनसे पटती नहीं। अतः पत्नी और माँ के साथ अलग सिलीगुड़ी में रहते हैं।

आठवीं में पढ़ते वक्त से आप बाजार में कपड़ा बेचते थे, फिर वह छूट गया। इन्टर में पढ़ते समय चावल की हस्किंग मशीन, गेहूँ पीसने की चक्की चलाते थे। उसके बाद जंगल के वृक्ष, नीलाम में कटवाकर सॉ मिल लाते थे। राजस्थान में हार्डवेयर की दुकान, तथा बंगाल में दवा की दुकान। आपने 20 साल तक सिलीगुड़ी में सिविल इंजीनियरिंग कन्सलटेन्सी की। आसाम में 3 महीने कि लिए एक प्रोजेक्ट में नौकरी की।

कृतित्व

बंगला में आपने खूब पढ़ा है, विशेषतः व्यंग्य–हास्य–रम्य–विनोद। भ्रमण और स्मृति कथाएँ आपके रुचिकर हैं। बंगला की व्यंग्य–रम्य रचनाएँ बड़े मजे ले–लेकर पढ़ते थे, फिर अकस्मात् बेढब बनारसी की 'बनारसी इक्का' और एक 'बेले लेतर' पढ़ने का सुयोग हुआ। उसके बाद व्यंग्य हास्य लिखने में सचेष्ट हो गए। प्राथमिक 3–4 व्यंग्य रचनाएँ बंगला में ही थी, फिर हिन्दी में प्रयत्न करने लगे। पहली रचना जलपाइगुड़ी की पत्रिका 'अशोक' में छपी– वह राजस्थानी में थी। उसके बाद जलपाइगुड़ी से साप्ताहिक पत्र पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन में सहयोग किए। उसमें हिन्दी की एकाध रचना शामिल रही है। आपने बंगला में अनुवाद का कार्य सन् 1960 से प्रारम्भ किया, जो स्तरीय पत्र पत्रिकाओं में छपते रहे। सन् 1963 में हिन्दी प्रतिनिधि कहानियों का बंगानुवाद 'तुमी केनो बोले दिले आमि सुन्दर' नाम से पुस्तक रूप में प्रकाशित। सन् 1978 से मूलतः हिन्दी में व्यंग्य लेखन, जो स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में छपते रहे, किया। सन् 1992 में हिन्दी में व्यंग्य– रम्य रचनाओं का संग्रह 'मार्क थी की गरीबी' के नाम से प्रकाशित हुआ। आपकी रचनाएँ आकाशवाणी कर्सियांग से नियमित प्रसारित होती रहीं हैं।

महावीर चाचान के व्यंग्य निबंधों में वचन वैदग्ध्य इस प्रकार है– "ज्यों – ज्यों प्राणी का विकास होता है, विकसित प्राणी में कुछ अंग या प्रत्यंगों की प्रयोजनीयता नहीं रह जाती है। देखिए – पूँछ! पूँछ कहाँ गई मनुष्य की। पर उसका स्वभाव देखकर ही लगता है, एक दिन पूँछ थी।" अस्पताल के बिल पर आपने इस प्रकार टिप्पणी की, "आया, मेहतर, झाड़ूदार से तो किसी तरह निपटाकर नर्सिंग होम का बिल देखकर माथा ठनका। जो – जो पत्नी को लगा, उसका बिल तो कर दिया था – जो कुछ लग सकता था, उसका भी बिल कर दिया था। चिथड़े के दाम से लेकर पेट काटने के चाकू की धार कराई के पैसे भी जोड़ दिए थे। डॉक्टर नहीं, डाकुओं के पल्ले पड़ गया था – फिरौती का पैसा लिए बिना पत्नी को छोड़ेंगे नहीं।"

समाजिक व्यवस्था एवं नारी के दर्द को आपने इस प्रकार उभारा है, "जनने वाली को कितनी भी पीड़ा क्यों न हो, जनक बनने में क्या लगता है ? संतान सुख तो मिल ही जाता है।"

सम्मान

मारवाड़ी युवा मंच, धुबड़ी (आसाम) की एक साहित्यिक संस्था, उत्तर बंग नाट्य जगत, निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन, बंगला देश के दैनिक पत्र उत्तर बांग्ला पत्रिका एवं सिलीगुड़ी युवा जागृति संघ द्वारा सम्मानित।

संदर्भ सूची :–

1.चाचान, महावीर : पत्नी का आपरेशन
2.चाचान, महावीर : मार्क थी की गरीबी

***

COMMON BEHAVIORAL SCHOOL ...

Contd.from page ... 54

rule breaking behavior that shows considerable stability over time. As adults, bullies are more likely to have criminal convocations and be Involved in serious crime.

Psychotherapyest should therefore ask directly about bulling. If students say that they are being bullied, they shoud be believed and ressured that they have done they right thing in telling. Parants should be Informed and advised of simple to take matter up with the school directly. Students can be advised of simple measures to protect themselves for example. Ignoring Name calling, making friends with a chid and studants, who is not involved, and telling some one such as a teacher or playground supervison.

So student can not face many types of behavior problems.

References :

(1) Chid Psychology psychiatry -1999, Elliot J.g. Practition Review.
(2) Hersov L. School refusal Br. Med. J. - 1972, 3 102, 4.
(3) Hersov L. School refusal. Br. Med. J. - 1972, 3 102, 4.
(4) Kennedy W.A School phobia - Rapid treatment of fifty cases. J. Abnormal psychology 1965, 70 285, 10.
(5) Bernstein G.A. Garfinkel BD pedigrees functioning and psychopathology In fimilies of school phobia children Am J. Psychiatry 1988, 145, 70 - 6-8
(6) Dignostic Menual - Addi - 6.
(7) Clinical psychology - Volum - 4.
(8) Kemey C.a. Identifying the function of school refusal behavior rivison of the school refusal assessment scales.
(9) Psychopathological Behavior Assessment - 2002, 238 to 45.
(10) The Emotional cost of bullying for parents and teachers www.psycho.ac
(11) DSM - IV - "Rumination disorder" (ICD - 9 code 307.53) dingnostic criteria.

***